<u>मनोविज्ञान के सम्प्रदाय (Schools of Psychology)</u>

5. अवयवीवाद (Gestalt School) :

जर्मनी में 1912 में 'व्यवहारवाद' के साथ ही 'अवयववाद का जन्म हुआ। अवयववाद को जर्मनी की भाषा में 'गेस्टाल्ट साइकोलाजी' कहते हैं। गेस्टाल्ट का अर्थ होता है रूप, आकृति, अवयवी, समग्र, पूर्ण आकार या समग्र या प्रतिदर्श । शिक्षा शास्त्रीय और मनोवैज्ञानिक शब्दावली में इसको समग्राकृति कहा गया है।

जो भी इस सम्प्रदाय के मनोवैज्ञानिक हैं वो केवल व्यवहार, चेतना और अचेतन मन के विश्लेषण से नहीं सन्तुष्ट हुए। इन मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि व्यवहार या अनुभूतियों के विश्लेषण में मानव व्यक्तित्व को सही तरह से नहीं समझा जा सकता है। इन मनोवैज्ञानिकों ने मानसिक अध्ययन के लिये समग्रता और अखण्डता के सिद्धान्त पर जोर दिया।

गेस्टाल्टवादी सम्प्रदाय ऐसे मनोवैज्ञानिकों का सम्प्रदाय है जो व्यवहार, क्रिया, घटना, व्यक्ति, वस्तु सभी के सम्पूर्ण रूप को आधार बनाकर अध्ययन करता है। इस सम्प्रदाय के मुख्य मनोवैज्ञानिकों में एम. वर्दीमर (M. Wertheimer) के. कोफका और कोहलर (W. Kohler) हैं।

अवयवीवाद का शिक्षा में योगदान (Contribution of Gestalt School in Education) :

किस तरह से अवयवी वाद ने शिक्षा को प्रभावित किया उसका वर्णन संक्षेप में यहाँ किया जा रहा है।

1. सीखना एक प्रयोजन सहित और उद्देश्य पूर्ण क्रिया है। विद्यार्थी के सामने अध्यापक को एक समस्या पेश करनी चाहिए। जब समस्या बालक के समाने आयेगी तो उसके मने में तनाव की स्थित पैदा होगी और क्रिया शक्ति उस व्यक्ति की बढ़ जायेगी। इस तनाव को दूर करने के लिये वे उस काम को

जल्दी पूरा कर लेते हैं। प्रोजक्ट और हूरिस्टिक प्रणाली में इस सिद्धान्त का प्रयोग किया जाता है।

2. सीखने की प्रक्रिया में इस सम्प्रदाय ने प्रत्यय ज्ञान पर सबसे ज्यादा बल दिया है। पहले अध्यापक को पाठ्यवस्तु को समग्र रूप में पेश करना चाहिए। किसी वस्तु घटना की सम्पूर्ण स्थिति को समझकर ही उस वस्तु या घटना का ज्ञान होता है। इस तथ्य को 'कोहलर' का प्रयोग और उसका सिद्धान्त (अन्तर्दृष्टि) का इस बात को सिद्ध करता है। यह सीखना अध्याय में विस्तार से समझाया जायेगा।

3. सामाजिक मनोविज्ञान और बाल मनोविज्ञान के क्षेत्र में इसने काफी महत्वपूर्ण काम किया है।

4 सीखने में चिन्तन और समस्या समाधान के लिये इस सिद्धान्त ने नये विचार दिये। ये सम्प्रदाय दूसरे सम्प्रदा से ज्यादा प्रगतिशील विचार रखता है।

5. इस सिद्धान्त या सम्प्रदाय द्वारा व्यक्तित्व के विकास और पर्यावरण के महत्व पर प्रकाश डाला गया।

6. इस सम्प्रदाय ने बुद्धि की व्याख्या दूसरे सम्प्रदायों की अपेक्षा ज्यादा स्पष्ट और तर्कपूर्ण तरीके से की है। सूझ अन्तर्दृष्टि का आधार बुद्धि ही होती है। बुद्धि के द्वारा ही पर्यावरण के साथ समायोजन होता